पहचान

अंजली काजल
मो. 9868119925

जब लड़की ने अपना फॉर्म कांपते हाथों से उनके सामने किया था तब किरण की नजर लड़की की कई जगह से सिली हुई जूती पर ठहर गई थी। लड़की ने जब फॉर्म किरण के हाथ में दिया था तब उसके पैरों की उँगलियाँ सिकुड़ गयीं थीं। किरण ने दाखिला फॉर्म को पढ़ा और श्रीमती साधना शर्मा से कहा, 'मैडम कम्पार्टमेंट केस है' किरण के कहने में सवाल था।

'एस.सी. है?'

'जी'

'ले लो।' श्रीमती साधना शर्मा ने कहा।

लड़की के चेहरे पर राहत की एक हलकी लहर आई और पैरों की सिकुड़ी हुई उँगलियाँ खुल गई। श्रीमती साधना शर्मा उसे जाते हुए देख रही थी, 'इन लोगों को सब माफ है। ना पढ़ना पड़ता है, ना पास होना होता है। सब भीख में मिल जाता है।'

***

स्टाफ रूम के 'गोस्सिपिंग क्लब' का वो हिस्सा नहीं थी, पर अनीता से अक्सर किताबों को लेकर चर्चा होती। अनीता की नियुक्ति 'लीव वकैंसी' पर हुई थी। जिसकी जगह पर उसे नियुक्त किया गया था, वो अध्यापक अपने बच्चों के पास कनाडा चले गए थे और उनके लौटने के आसार कम थे। अनीता इस कॉलेज के ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे शोषण का शिकार हो रही थीं। उन्हें तय मानदेय से कम पैसा दिया जाता था पर हस्ताक्षर पूरे मानदेय पर कराया जा रहा था। जिस दिन तनख्वाह मिलने का दिन होता और वो हस्ताक्षर करती तब हँसते हुए क्लर्क से कहती, 'एक दिन सबको फंसा दूंगी।' आगे से वो दोनों हाथ जोड़ देता और कहता, 'मैं भी मालिक का नौकर ही हूँ मैडम।'

अनीता ने श्रीमती शर्मा को सपना के साथ स्टाफ रूम में आते हुए देखा। 'सपना बेबी, अगर सेहत ठीक नहीं लग रही थी तो आज छुट्टी कर लेती' श्रीमती साधना ने सपना को लाड़ लड़ाते हुए कहा।

'सुबह पहले सोचा था आज नहीं आऊँ, बट! घर पर भी क्या करती। यहाँ आकर 'टाइम पास' हो जाता है। और फिर मेरा, बेबी, भी खुश रहता है यहाँ...। इतने 'डेलीशिस' खाने भी तो मिलते हैं आप लोगों से।'

सपना अपने उभरे पेट पर हाथ फेरते हुए हंसी। सपना वशिष्ट कॉलेज प्रिंसिपल की रिश्तेदार थीं उन दिनों खबर उड़ रही थी कि उसकी 'अस्थायी' अध्यापिका की नौकरी जल्दी ही 'स्थायी' में बदलने वाली थी।

'प्रगतिशीलों ने इस देश को तबाह कर रखा है।' श्रीमती साधना शर्मा का पसंदीदा जुमला बोलते हुए किरण ने अनीता को आँख मारी। दोनों खिलखिला कर हंस दी।

किरण सहगल जी को चोर नजर से देख रही थी जब अनीता ने उसे पकड़ लिया।

'क्या निहार रही हो बन्नो?'

'यही कि, मिडिल ऐज, भी काफी दिलचस्प होती है। जब सहगल जी हमें पढ़ाने आते थे वो मेरे कॉलेज के शुरुआत के दिन थे... उन दिनों उनके बारे में सुनती थी कि लड़कियां उनके लेक्चर में खाली उन्हें देखने जाती थी, पर मुझे उनका मंच पर बोलना अच्छा लगता था।'

'सीधा क्यों नहीं कहती सहगल जी तुम्हारे, क्रश, थे।' अनीता ने छेड़ा।

'हाँ कुछ, क्रश, जैसा ही मामला था। समाज में कुछ बदलने की बात करने वाला हर आदमी मेरा ध्यान खींचता था तब।'

दोनों हंसती रही।

'बहुत बुरा हाल है। बच्चे किताब तो पढ़ना ही नहीं चाहते हैं। सिवाए कोर्स के किसी और किताब को पढ़ने में उनको दिलचस्पी ही नहीं है।' सहगल जी अनीता और किरण के पास वाली कुर्सी पर बैठते हुए गहरी सांस लेते हैं।

'इंसान की समझ पर पड़े परदे कई बार किताब पढ़ने से भी नहीं खुल पाते।' किरण की बात पर सहगल जी मुस्कुराए, फिर उन्हें कुछ याद आ गया।

'आप दोनों से एक काम है। यूथ फेस्टिवल के लिए दो बच्चों को चुनकर भेजना है, कविता-पाठ के लिए। एक बच्ची को मैंने तैयार किया है, एक आप लोग बताइये।'

*****

किरण ने 'लेक्चर रूम' में बैठी लड़कियों पर निगाह दौड़ाई। हर साल की तरह इस साल भी वाणिज्य पढ़ने वाली लड़कियां कम हो गई थीं। लड़कियों का यह कॉलेज शहर की उस बस्ती के बहुत करीब था जहाँ शहर के एक खास व्यापारियों के घर थे। ये लोग उस बस्ती में एक समुदाय की तरह इकट्ठे रहते थे। बस्ती के पास होने की वजह से इनकें घरों की ज्यादातर लड़कियां इसी कॉलेज में पढ़ने के लिए आती थी। ऐसा कहा जाता था कि ये समुदाय अपनी लड़कियों के दाखिला के समय ट्रस्ट को अच्छा खासा चंदा भी देता था। ज्यादातर लड़कियां अच्छे स्कूलों से पढ़कर आतीं। इनमें से जो लड़कियां अच्छे अंक लाती वे वाणिज्य पढ़ने को चुनती। पर यही लड़कियां बाहरवीं के बाद वाणिज्य छोड़कर स्नातक में चली जातीं थीं। किरण को धीरे-धीरे इसकी वजह का पता चला। इनके घरों की औरतें केवल घर संभालतीं। उन्हें घर से बाहर जाकर काम करने की अनुमति नहीं मिलती थीं। कुछ इक्का-दुक्का लड़कियां जिद्द करके घरवालों को मना पाती बाकी हार मान लेतीं। जो हार मान लेतीं वो लड़कियां बाहरवीं कक्षा के बाद वाणिज्य छोड़ होम साइंस, चित्र कला या स्नातक के दूसरे विषय चुन लेतीं।

शुरुआती परिचय के बाद किरण ने लड़कियों से एक सवाल किया कि जीवन में वे आगे क्या करना चाहती हैं? कुछ लड़कियों ने आगे चलकर 'चार्टर्ड अकाउंटेंट' बनने की इच्छा जताई, कुछ ने अध्यापिका बनने की, तो कुछ को पता नहीं था, उन्हें क्या करना है। कुछ ने कहा, मौका ही नहीं मिलेगा, क्योंकि आखरी साल तक पहुँचते-पहुँचते घरवाले उनकी शादी कर चुके होंगे। फिर एक लड़की झिझकते हुए अपनी बारी आने पर खड़ी हुई। उसने अपने दुपट्टे को संभाला और किरण की ओर देखते हुए बोली, 'मै बहुत पढ़ना चाहती हूँ। तब तक पढ़ती रहना चाहती हूँ, जब तक मेरा मन करे। इस पढ़ाई के लिए साथ में कुछ काम करुँगी, कुछ ऐसा काम जो मेरी पढ़ाई के खर्चे को चला पाए। और फिर एक दिन मैं अपनी बस्ती में एक स्कूल भी खोलना चाहती हूँ ताकि मेरी बस्ती की लड़कियों को पढ़ने के लिए दूर ना जाना पड़े।'

पीछे के बेंच पर बैठी कुछ लड़कियाँ हंस पड़ी। वो लड़की झिझककर अपनी बेंच पर बैठ गई। किरण ने उस लड़की को पहचाना। ये वही लड़की थी जो उस दिन फॉर्म जमा करने आई थी।

*****

उस दिन के बाद किरण ने कई बार उस फॉर्म वाली लड़की को कॉलेज में देखा। ज्यादातर वो लाइब्रेरी के एक कोने में बैठी पढ़ रही होती। जिस तरह की पत्रिकाएं और किताबें वो पढ़ती,

वो किरण का ध्यान खींचती थी। एक दिन जब वो लड़की लाइब्रेरी में बैठी पढ़ रही थी, लड़की ने आँख उठाकर किरण की ओर देखा, किरण ने उसे इशारे से बुलाया। लड़की थोड़ा-सा घबरा गई थी।

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'मैडम, गीता।'

'किस विषय में कम्पार्टमेंट है तुम्हारी?'

'गणित में'।

'तुमने वाणिज्य पढ़ने का निर्णय आप लिया था या किसी के कहने पर यह विषय चुना था?'

'मैंने आप ही चुना था।'

'तुम चाहो तो इस विषय को बदल सकती हो अभी भी?'

'नहीं मुझे इस विषय को बदलना नहीं है।'

किरण कुछ देर उसके चेहरे के भाव पढ़ती रही।

*****

गीता ने कॉलेज के 'नोटिस बोर्ड' पर कविता-पाठ प्रतियोगिता के बारे में पढ़ा। सबसे नीचे लिखा था कि भाग लेने के लिए किरण या सहगल जी को अपनी कविता के साथ संपर्क करें। कुछ पल वो वहीं खड़ी सोचती रही, फिर आगे बढ़ गई।

किरण ने गीता को कल गणित की किताब लेकर 'स्टडी रूम' में आने के लिए कहा था। गीता 'स्टडी रूम' की ओर चल पड़ी।

*****

'आज सचमुच बहुत बुरा लगा जिस तरह लड़कियों ने सभागार में 'हूटिंग' की। इतने बड़े शास्त्रीय संगीत के कलाकार आए और इन लड़कियों ने सभागार में जो किया बहुत बुरा संदेश गया।'

आज 'स्टाफ रूम' में चर्चा का विषय यही था। श्रीमती सिंघल जो कि संगीत पढ़ाती हैं, ने किरण की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ये सब 'साइंस' और 'कॉमर्स' के विद्यार्थी ही होते हैं जो कलाकारों के प्रति ऐसा रवैया रखते हैं।'

जब भी कॉलेज में कोई शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम होता ऐसा आम ही देखने को मिलता था कि सभागार में लड़कियाँ कम होती। पिछली बार प्राध्यापक ने ऐसे ही किसी कार्यक्रम के बाद 'नोटिस बोर्ड' पर प्राध्यापक का आदेश लगवाया गया था कि ऐसे सभी कार्यक्रम में उपस्थित होना सब विषय के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होगा। तब से लड़कियां, जिन्हें जबरदस्ती वहां बिठाया जाता वे कार्यक्रम में कई बार 'हल्ला' करती पायीं गयीं।

'जब ये लड़कियां शास्त्रीय संगीत नहीं सुनना चाहती तो उनको जबरदस्ती वहां भेजना भी गलत है। इन कलाओं की कद्र वही कर सकता है जिसे इन कलाओं की पर्याप्त जानकारी दी जाये। हम बच्चों को सब तरह की कलाओं की जानकारी अगर दें तब शायद उनमें से कई इन्हें सुनना पसंद करें। और मैं ऐसे बहुत से लेखकों को जानती हूँ जिनकी पृष्ठभूमि 'साइंस' और 'कॉमर्स' जैसे विषयों में है और वे अच्छे लेखक हैं।' किरण ने अपना पक्ष रखा। पर इस चर्चा के बहाने उसे अपने महिला कॉलेज की याद हो आई। कॉलेज भी स्कूल जैसा लगता था। लड़कियों के सब कॉलेज में दोपहर के एक निश्चित समय तक गेट बंद रखे जाते थे ताकि लड़कियां जब एक बार कॉलेज में दाखिल हो जाएँ तब बाहर ना जा पायें। हफ्ते में एक दिन स्कूल की तरह वर्दी पहनना अनिवार्य होता था। लड़कों के कॉलेज में ऐसे कोई नियम नहीं थे जो लड़कियों के कॉलेज में थे। हर छोटे शहर में लगभग यही स्थिति थी, बल्कि इससे भी बुरी।

'मुझे याद है एक बार मेरा एक मित्र मुझे कोई किताब देने मेरे कॉलेज पहुँच गया। वो तय समय से पहले आ गया और मैं गेट के इस पार उसको देख पा रही थी पर मुझे किसी ने बाहर जाने की अनुमति नहीं दी। उस दिन वो मुझे गुस्से में बोला, 'अगर मेरी कोई बेटी हुई तो मै उसे कभी इस तरह के कॉलेज में पढ़ने नहीं भेजूंगा।'

सहगल जी और अनीता के चेहरे पर मुस्कराहट थी। श्रीमती साधना ने चिढ़कर कहा, 'ऐसा कुछ लड़कियों की वजह से करना पड़ता है। ये छोटी जाति के लोग भी अब पढ़ने आने लगे हैं, पर इनके संस्कार तो बने नहीं। संस्कार तो घर से बनते हैं।' किरण कुछ नहीं बोली इसके बाद।

*****

कुछ दिन गीता को पढ़ाने के बाद किरण जान गई थी कि गीता पढ़ने में कमजोर नहीं थी। एक दिन उसने गीता की कॉपी में लिखी कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं–'आसमान भी मेरी तरह चुप है, मुझपर भी एक कोहरा सा छाया है।'

उस दिन दोपहर में उसने गीता से पूछा, 'क्या तुम मंच पर कविता पढ़ोगी?' गीता की आँखों में चमक आ गयी थी।

*****

पूजा जैन नेअपनी कविता आत्म-विश्वास के साथ पढ़ी। सहगल जी ने गौरवान्वित नजरों से किरण को देखा। जैसे ही सहगल जी ने गीता से कविता पढ़ने के लिए कहा, उसकी साँसें तेज-तेज चलने लगी, माथे पर पसीना बह आया। वो कुछ भी बोल नहीं पायी। किरण ने गीता के सिर पर हाथ रखा और उसे जाने के लिए कहा।

'कॉलेज की प्रतिष्ठा का मामला है' सहगल जी धीमे से बोले।

दोनों लड़कियों को भेज दिया गया तब किरण ने सहगल जी से कहा, 'नारी की महानता और ममता का महिमामंडन करती कविताएं मुझे पका देती हैं।' सहगल जी सुनकर हंस पड़े।

'पूजा का उच्चारण अच्छा है। कविता बदली जा सकती है।'

*****

'तुम मेरी बहन की शादी में क्यों नहीं आई?' सरबजीत ने उलाहना देते हुए पूछा।

'मुझे लड़कियों की शादी में जाना पसंद नहीं है।'

'क्यों पसंद नहीं है?'

'लड़कियां जब विदा हो जाती हैं, घर में एक मनहूस-सा सन्नाटा छा जाता है।'

सरबजीत की आँखों में बूँदें छलक आई।

'तुम्हारी दीदी की शादी हो चुकी है न?'

'हाँ!', गीता ने धीरे-से जवाब दिया।

*****

आज फिर गीता को कविता पढ़नी थी। पूजा और उसके साथ आई उसकी दो सहेलियां गीता को आते देखकर अजीब तरीके से हंसने लगी। गीता जब पास आकर खड़ी हुई, किरण का ध्यान आज फिर उसके पैरों पर गया। उसके पैर की उँगलियाँ जूते के अंदर सिकुड़ रही थी और वो बार-बार अपने होठों पर जीभ घुमा रही थी। किरण ने देखा जैसे ही पूजा ने कविता पढ़नी शुरू की, गीता के माथे पर पसीना बहने लगा।

उसने गीता को बैठने के लिए इशारा किया। गीता को पानी पिलाया गया। उस दिन किरण को पता चल गया था कि गीता को 'पैनिक अटैक' होते थे।

'बेकार मेहनत कर रही हो किरण', जाते-जाते सहगल जी किरण से कह गए।

अगले दिन जब गीता पढ़ने के लिए 'स्टडी रूम' में किरण के पास आई, किरण ने गीता से बातें करना शुरू किया। वो उससे तब तक बातें करती रही जब तक कि गीता उसके साथ कुछ सहज नहीं हो गई। इसी दौरान बातचीत में उसे पता चला उसकी दो बहनें और एक बड़ा भाई था। एक बहन उससे छोटी थी और एक बड़ी। पिता एक फैक्ट्री में काम करते थे।

गीता के भाई को कॉलेज के पहले ही दिन जब यह सुनना पड़ा था 'तुम्हारी औकात नहीं है इस कॉलेज में पढ़ने की।' तब उसका पढ़ाई से मन उचट गया था। यही नहीं उसकी खराब अंग्रेजी और टाट वाले सरकारी स्कूल की पढ़ाई उसे कुंठित करने लगी थी। उसे एहसास हुआ कि आरक्षण से उस कॉलेज में दाखिला ले लेने भर से समस्याओं का हल नहीं हो गया था बल्कि ये शुरुआत थी। आखिर तंग आकर एक दिन उसने पढ़ाई छोड़ दी और पिता के साथ होजरी मिल में काम करने जाने लगा।

*****

इससे पहले कि कोई गीता से कविता पढ़ने के लिए कहता, किरण ने पूजा की सहेलियों को वहां से जाने के लिए कह दिया। पूजा अब एक मशहूर साहित्यकार की एक लंबी कविता याद करके आई थी। सहगल जी ने मुस्कुराते हुए किरण की ओर देखा तब किरण समझ गयी थी उनका मतलब। उसने पूजा के नाम पर सहमति दे दी थी।

सहगल जी जब उठकर चले गए तब किरण ने गीता से कहा, 'गीता, ये तुम्हारी कविता है और तुम्हें इसे महसूस करते हुए बोलना है। बस!'

उसने गीता से कविता पढ़ने के लिए कहा। गीता ने झिझकते हुए कहा, 'मैं कविता याद नहीं कर पा रही हूँ। क्या मै अपनी कविता पढ़कर बोल सकती हूँ?'

उसने हाथ में एक पन्ना पकड़ रखा था जिसपर कविता लिखी थी। सहगल जी ने उसे कविता पढ़कर ही बोलने के लिए कहा।

उस दिन गीता ने पहली बार सहज होकर कविता पढ़ी। किरण को पता था सहगल जी जानते थे कि कविता में कुछ बात थी। उस दिन वे स्वयं कह रहे थे, 'आखिर कितने बच्चे स्वरचित कविता बोलते हैं?'

*****

बात सहगल जी ने ही शुरू की थी। उन्होंने 'स्टाफ रूम' में कम्बोज जी

से उनके बच्चे के कॉलेज में दाखिले के बारे में पूछा था।

'सर नहीं हो पाया।'

'ओह! प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गई है' सहगल जी ने कहा।

'प्रतिस्पर्धा तो ठीक है पर इन आरक्षण वालों ने भी तो कब्जा कर रखा है। हमारे बच्चों की सीटों पर, कम्बोज जी ने गुस्से में कहा था।

किरण को पता था बात यहीं पहुंचेंगी। उसके अंदर कुछ दहकने लगा था।

'सर आपके बच्चे के कितने नंबर थे?' किरण ने कम्बोज जी से पूछा।

'अस्सी प्रतिशत'

'और 'कट ऑफ' क्या रहा?'

'पचासी प्रतिशत'

'तो फिर उसे और मेहनत करनी होगी।'

'पर आरक्षण से आने वाले बच्चों के साठ प्रतिशत थे और उनको दाखिला मिल गया।'

'सर आप अनुसूचित जाति से हैं क्या?'

'नहीं नहीं मैडम?' कम्बोज जी उखड़ गए।

'फिर आप उनसे अपना मुकाबला क्यों कर रहे हैं? वे वंचित वर्ग के लोग हैं।'

'क्या वंचित वर्ग मैडम। हरामखोर हैं। इनकी और कितनी पीढ़ियों को आरक्षण चाहिए?'

'सर सदियों का फासला है, कुछ समय तो लगेगा साथ आने में।'

उसके बाद श्रीमती साधना भी बहस में कूद पड़ीं। कम्बोज जी तो लगभग गाली पर उतर आये। वही-वही बातें, 'आरक्षण एक भीख है, ये लोग खाली वोट बैंक हैं, इस देश की नाकामी का कारण आरक्षण से भर्ती हुए लोग हैं, आरक्षण से बने डॉक्टर से कितने लोगों की जान को खतरा है, कितने पुल गिरते हैं इन आरक्षण वालों की वजह से आदि-आदि।

बहस से स्टाफ रूम गरम हो गया। और अंत में वो बहस में एक तरफ अकेली ही रह गई। इस देश में हर बहस आरक्षण पर आकर खत्म होती है। पूरा देश आरक्षण का मारा हुआ है। पड़ोसी शुक्ला जी की बीवी परेशान थी, 'देखो शहरों में अब कहाँ ये लोग हमारे घरों के पाखाना साफ करते हैं। अब सब हमें खुद ही करना पड़ता है।' स्कूल के मास्टर उसकी सहेली को जो हरियाणा के एक सरकारी स्कूल में पढ़ाती थी, कहते थे, 'बेटी इन छोटी जात वालों को ज्यादा मत पढ़ाया कर। बड़े होकर हमारे ही बच्चों के लिए मुश्किल बनेगें।'

किरण को सब लोगों का कम्बोज जी के पक्ष में बोलना उतना नहीं खला था जितना सहगल जी का चुप लगा। जाना, चुप्पी की राजनीति!

'समय अब बदल चुका है। हमारे बाप-दादाओं की गलती की सजा हमारे बच्चे क्यों भुगतें?' कम्बोज जी ने सबका समर्थन मिल जाने के बाद कहा।

'समय इतना भी नहीं बदला कम्बोज जी। कॉलेज में मेरा पहला दिन था और आपका मुझसे पहला सवाल था, 'आपकी कास्ट क्या है? ...आप क्यों जानना चाहते थे मेरी जाति? ...जब जाति का कोई महत्त्व नहीं रहा, तब हम क्यों अभी तक अपनी जातियों में शादी करते हैं? क्यों हम अपनी जाति के लोगों को नौकरी पर रखते हैं?'

किरण ने एक ठंडी सांस ली।

'कॉलेज के पहले ही दिन आपका 'मेरी जाति क्या है' पूछना मुझे काफी निराश कर गया था। सोच रही थी इस सवाल को मेरी शैक्षणिक योग्यता क्या है, होना चाहिए था। मैं आज बता देती हूँ, मेरी जाति क्या है, कम्बोज जी। मैं उसी जाति से हूँ जिसे अभी आप हरामखोर कहकर संबोधित कर रहे हैं।'

श्रीमती साधना हकलायीं, 'आ..आ... आप तो नहीं हो सकती।'

'क्यों नहीं हो सकती? क्योंकि मैं आपके बराबर आ बैठी हूँ?'

'स्टाफ रूम' में श्मशान-सा सन्नाटा छा गया।

*****

उस शाम किरण अपने कमरे में कम रोशनी में अकेली बैठी थी। जब भी उसका मन ठीक ना होता, वो अपने कमरे में अपनी पसंद का संगीत सुनती या किताब पढ़ती। पर स्टाफ रूम में हुई बहसों का शोर अभी भी उसके अंदर हाहाकार मचाये हुए था।

उसे कॉलेज के दिन याद आए। जब दूसरी लड़कियाँ लड़कों की बातें करती, लड़कों के ख्याल में गुम रहतीं थीं, किरण अखबार और किताबों में डूबी रहती थी। जिन दिनों लड़कियाँ नए फैशन के सूट सिला रही थीं, किरण अपने सरकारी स्कूल की पढ़ाई की कमियाँ दूर करने में लगी रहती थी। जिन दिनों लड़कियाँ नए-नए शहर, पहाड़ी इलाके घूमने जातीं थी, वो लाइब्रेरी की खाक छानती घूमती थी। जिन दिनों लड़कियां ब्यूटी पार्लर जाकर अपने बाल सीधे करवाने में लगी थीं, किरण अंग्रेजी

भाषा को सीखने में लगी थी ताकि पंजाबी माध्यम वाली स्कूल की पढ़ाई के ठप्पे से पीछा छुड़ा पाए। जब लड़कियां अपनी शादी की तैयारियों में व्यस्त थीं, किरण अपने पैरों पर खड़े होने की जद्दो-जहद में लगी थी। 'आरक्षण की सीट' ने उसे इतना झिलाया था कि हर समय उसे लगता उसे सारी दुनिया को कुछ साबित करना है। और जल्दी ही एक नौकरी पा लेने के बाद उसे प्रेम हो गया था। किरण का 'पहला प्यार' जो शादी तक पहुँच जाने के पहले टूट गया था। वो एक ब्राह्मण परिवार से था, उसने कहा था, 'बुरा मत मानना। अब देखो मेरे घरवाले जब एक 'छोटी जाति' की लड़की को बहू स्वीकार कर रहे हैं तो तुम्हारे माँ-बाप को भी उनकी कुछ शर्तें माननी होंगी।'

एक सवाल उसके जहन में बार-बार उठ रहा था। आज तक क्यों उसमें इतनी हिम्मत नहीं आ पाई थी कि वो कॉलेज में अपनी जाति बता पाती? क्यों इस सवाल को वो टालती रही थी?

उसे अपने मामा के बेटे की बात याद आयी जो उसने कही थी जब उसने अपनी नई नौकरी शुरू की थी, 'यह कोई सरकारी नौकरी नहीं है। निजी क्षेत्र में काम करते हुए तुम्हें बहुत ख्याल रखना होगा। अगर तुम हर जगह अपनी जाति बताती रहोगी, ये ब्राह्मण और बनिया लोग तुम्हें कभी आगे नहीं बढ़ने देंगे। सफल होना है तो अपनी जाति छुपाओ'

गीता ने उसके अंदर ऐसा क्या बदल दिया था कि अब और वो उस कॉलेज में अपनी जाति छुपाकर नहीं रखना चाहती थी?

*****

गजब दिन था वो भी। लड़कियों में उत्साह था। निर्णायक मंडल में एक जाने माने साहित्यकार भी थे। सहगल जी मंच के सामने कुर्सियों की दूसरी कतार में बैठे थे। किरण भी उनके साथ बैठी थी। श्रीमती साधना शर्मा के साथ कॉलेज के कई अध्यापक मौजूद थे।

सहगल जी उस दिन 'स्टाफ रूम' में हुई चर्चा के बाद जैसे किरण से आँखें नहीं मिला पाते थे। आज कार्यक्रम शुरू होने से पहले किरण के पास आए और कुछ देर जैसे शब्द ढूँढ़ते रहे।

'आप सही कहतीं थीं कि किताबें भी हमारी सोच पर पड़े पर्दों को नहीं उतार पाती कई बार। मैं गीता के बारे में गलत था।'

लड़कियाँ बड़ी-बड़ी कविताएँ याद करके आई थी और उन कविताओं को बहुत आत्मविश्वास के साथ मंच पर बोल रहीं थीं। आखिरकार गीता का नाम बोला गया। वो हलके गुलाबी रंग का सलवार सूट पहनकर आई थी और उसके बाल लंबी चोटी में गुंथे हुए थे। वो मंच पर जा खड़ी हुई। अभी दो दिन पहले पता चला गीता ने गणित की परीक्षा पचपन प्रतिशत अंकों से पास कर ली थी। एक पल के लिए किरण के जहन में वही समय उभर आया जब गीता कांपते हाथों से फॉर्म जमा करने आई थी।

गीता ने जब शुरुआती संबोधनों के साथ अपनी स्वरचित कविता का शीर्षक 'पहचान' बताया, अभी तक एक भी लड़की ने स्वरचित कविता नहीं पढ़ी थी। गीता ने कविता पढ़ना शुरू किया।

'उसने दुनिया को जब
अपनी निगाह से देखना शुरू किया था
उसे लगा था
दु:ख से गहरा कुछ न होगा दुनिया में
और गरीबी से बड़ी कोई मार ना होगी
पर ज्ञान का सूरज उगेगा जब देश में
फिर बीच में कोई दीवार न होगी
लेकिन दुनिया की अलग थी हकीकत
दु:ख से ज्यादा मारक थी नफरत
किसी का अपना पूरा शहर था
किसी के हिस्से सदियों का सफर था
मेरी माँ के हाथों में कालिख लिखी थी
मेरे पिता के तन पे किसी और की मिट्टी थी
हिस्से में हमारे कोई खेत नहीं था
हमारे नाम का तो कोई देश नहीं था
अपने होने से ज्यादा पहचान जरूरी थी
हमारे बीच अभी सदियों की दूरी थी'

सभागार तालियों से गूँज उठा। उस कविता को सुनने के बाद किसी के भी कानों में कुछ और नहीं जा रहा था।❑

सांख्य संवाद

कपिल मुनि को सांख्य दर्शन का जनक और संग्रहकर्ता दोनों ही माना जाता है, हालांकि दोनों तरह के मत अलग-अलग विद्वानों के हैं। फिर भी यह बात गौर करने लायक है कि सांख्य का ज्ञान कपिल ने आसुरि को दिया। विद्वानों का मत है कि आसुरि कोई व्यक्ति होगा, इसका ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, लेकिन सूर से भिन्न असूर समाज है, बहुत संभव है कि असूर अथवा उनकी संतति को ही आसूरि कहा गया था। कपिल ने जिसे अपना सांख्य ज्ञान दिया वह आसूरि वास्तव में असूरों की संतान ही थे। चौखंबा ओरियंटालिया से प्रकाशित 'सांख्यदर्शनम्' (पृ. १९) में डॉ. राकेश शास्त्री मान चुके हैं-' ऋग्वेद के मंत्रों में अनेक स्थलों पर सांख्यदर्शन के सिद्धांतों एवं तत्त्वों को मूलरूप में सहज देखा जा सकता है।' वेदों में ऋग्वेद सबसे महत्वपूर्ण और पुराना है, उसमें सांख्य की मौजूदगी अपने-आप सिद्ध करती है कि सांख्य वेदों से पुराना है। इसी के साथ यह भी सिद्ध होता है कि यह भारत के मूलनिवासियों का दर्शन है।